विद्या भवन बालिका विद्यापीठ

शक्ति उत्थान आश्रम लखीसराय

विषय संस्कृत दिनांक 17-02-2021

वर्ग षष्ठ शिक्षक राजेश कुमार पाण्डेय

एन० सी० ई० आर० टी० पर आधारित

सन्धि की परिभाषा - "वर्ण-सन्धानं सन्धिः" इस नियम के अनुसार दो वर्णों के मेल का सन्धि कहते हैं। अर्थात् कि दो वर्णों के मेल जो विकार उत्पन्न होता है उसे 'सन्धि' कहते हैं। वर्ण सन्धान को संधि कहते हैं।

जैसे-अ+ अ = आ यहाँ पर दो अ (अ+ अ) मिलकर 'आ' हो गया है, अतः इसे 'सन्धि' कहते हैं।

पाणिनीय परिभाषा "पर: सन्निकर्ष: संहिता" अर्थीत् वर्णों की निकटता को संहिता कहा जाता है।

प्रथम पद के अन्तिम वर्ण तथा द्वितीय पद के प्रथम वर्ण में सन्धि होती है। जैसे-उप के अ तथा इन्द्रः के इ को मिलाकर ए बना = उपेन्द्रः पद का निर्माण हुआ।

संस्कृत: संधि परिभाषा,भेद और उदाहरण

सन्धि के नियम

संहितैकपदें नित्या धातपसर्गयोः। नित्या समासे, वाक्ये तु सा विवक्षामपेक्षते॥

एक पद में सन्धि नित्य होती है और धातु तथा उपसर्ग के योग में, समास में सन्धि अवश्य करनी चाहिये।

जैसे

1. एक पद में-भो+ अति = भवति । पौ + अक = पावक।

2. धातु और उपसर्ग के योग में-प्र + एजते = प्रेजते। सम् + हरते = संहरते।

3. समास में-पीतम् अम्बरं यस्य सः = पीताम्बरः।

सन्धि के प्रकार

संस्कृत में संधि के तीन मुख्य प्रकार होते हैं।

स्वर (अच् सन्धि)

व्यंजन (हल् सन्धि)

विसर्ग

1.स्वर संधि

अच् सन्धि भी कहा है। स्वर वर्ण परस्पर मिलते हैं और उनके मिलने पर जो विकार उत्पन्न हो, कहते हैं।

जैसे-उपेन्द्रः, नदीश, तथैव।

स्वर सन्धि (अच् सन्धि) के भेद

सवर्ण दीर्घ सन्धि (स्वर संधि)

गुण संधि

वृद्धि संधि

यण् संधि

अयादि संधि